डॉ रूचिरा ढींगरा
एसोसिएट प्रोफेसर,हिंदी विभाग
शिवाजीकालेज,दिल्लीविश्वविद्यालय

जैनेंद्र की सुनीता

Lesson 6

सुनीता--

जैनेन्द्र कुमार ने अपनी नारी पात्रों के विभिन्न रूपों (प्रथम प्रमुख रचना परख बाल वैधव्य पर है तो अंतिम अपूर्ण रचना दशार्क देह व्यापार पर) , उसकी क्षमताओं, क्रिया - प्रतिक्रियाओं का सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक दृष्टि से अंकन

- सुनीता , त्यागपत्र, सुखदा उपन्यासों में अनेक स्थानों पर मानसिक संघर्ष
- कथानायिका सुनीता उसके शीर्षक का आधार है।
- वह मध्यमवर्गीय परिवार की सुंदर , सुघड़, सुशिक्षित, कर्मठ विवाहिता है , सितार, वायलन आदि वाद्य यंत्रों को बजाने में निपुण है।
- वैवाहिक जीवन में फैली नीरसता और रिक्तता से अवगत है ।
- अपने हृदयगत भावों को अभिव्यक्त करना कठिन ।
- जीवन की एकरसता को दूर करने के लिए कुछ परिवर्तन चाहती है।
- अपने प्रति हरि के आकर्षण को समझती है उसके प्रति समर्पित होना चाहती है ।
    - विचार शील , कर्मठ भी है।
    - सुनीता के माध्यम से युवाओं में उत्साह और जोश का संचार
    - हरिप्रसन्न ---" तुम अपनी शक्ति पहचानने से नहीं दब सकतीं, तुममें सब कुछ है।"(1)

वह आधुनिक नारी है पर सर्वथा स्वतंत्र नहीं है।

- ✓ जब हरि >रानी सुनीता कहकर पुकारता है >विरोध करती >वास्तव में वह गृहस्थ सुनीता थी
- ✓ अपनी हर इच्छा के लिए पुरुष की स्वीकृति चाहिए।
- ✓ वह हरि से स्वयं नहीं जुड़ती। श्रीकांत उसे बार बार बाध्य करता है। इसके विपरीत मुक्तिबोध उपन्यास में नायिका नीला स्वयं प्रेमी के साथ दैहिक सुख की कामना करती है।

संवेदनशील , व्यक्तिवादी , अहंग्रस्त युग की देन-

- ❖ आत्म विश्लेषण द्वारा श्रीकांत के प्रति अपनी बेरुखी के लिए नीरसता को दोषी

- ❖ अपने अंदर के संकोच एवं द्वंद को नि:संकोच स्वीकार
- ❖ श्रीकांत के प्रति एकनिष्ठ रहना चाहती है
- ❖ पति के साथ रहते हुए भी उसके अंतर्मन में हरिप्रसन्न के संपर्क की आकांक्षा ।
- ▪ धीरे-धीरे हरिप्रसन्न की ओर आकृष्ट
- ▪ उसके व्यक्तित्व के अनकहे, अनसुलझे आकर्षण को सहजता से अस्वीकार नहीं
- ▪ हल्के से स्पर्श से भी रोमांच अनुभव

हरिप्रसन्न के प्रति उसके झुकाव--

1. हरिप्रसन्न के कमरे में बार-बार जाना
2. उसकी हर सुविधा का ध्यान
3. उसके विलम्ब से आने पर व्याकुल हो खाना ना खाना
4. सितार ज़ोर से बजाकर अपनी खींज मिटाना
5. असाधारण नारी, खोखली मर्यादा के बंधनों को तोड़ती हैं।

सुनीता दोहरा व्यक्तित्व जीती है ।

I. हृदय और बुद्धि के संघर्ष से द्विधाग्रस्त
II. बुद्धि उसे पति की ओर खींचती है तो हृदय हरिप्रसन्न
III. उसकी दृष्टि में श्रीकांत देवता नहीं है और ना ही वह देवी है ।
IV. वह अपने प्रति ईमानदार

जैनेन्द्र जी को परंपरागत नैतिकता के मानदंड अस्वीकार

1) सुनीता का प्रेमी की ओर झुकना अनुचित नहीं
2) नारी उसमें भीरुता या दब्बूपन को उचित नहीं
3) सुनीता को कुंठा मुक्त करने के लिए हरिप्रसन्न का अवलंब
4) हरिप्रसन्न की उद्दाम वासना से अपनी रक्षा के लिए अहिंसा का मार्ग
5) उसकी अपूर्व दृढ़ता हरिप्रसन्न को संकुचित और लज्जित
6) कालांतर में दोनों एक -दूसरे को कुंठा मुक्त करते हैं।

सत्या...

सत्या उपन्यास की गौण पात्रा

- सुनीता की छोटी बहन है , बारहवीं कक्षा की छात्रा ,कुशाग्र बुद्धि ,वायलिन बजाने में निपुण
- आयुजनित अपरिपक्वता है।
- हरिप्रसन्न के प्रति आकृष्ट , अलमारी में रखी पिस्तौल को देखकर आतंकित

- उसे सुनीता का हरिप्रसन्न के साथ रात को बाहर जाना उचित नहीं , उसकी बात छुपाती है ।
- श्रीकांत को फल की दुकान से अपने घर ले आती है और रात में आग्रह पूर्वक रोकती है ।
- तनाव को दूर करने का प्रयत्न ।